nbt.india

भाग सनी भाग

जयंती रंगनाथन ■ चित्रांकन : बरखा लोहिया

8 से 10 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-9127-2

पहला ईप्रिट संस्करण : 2020

© जयंती रंगनाथन

Bhag Sunny Bhag *(Hindi Original)*

₹ 30.00

ईप्रिट द्रवारा ऑर्नट टेक्नो सविसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

nbt.india
एकः सूते सकलम्

नेहरू बाल पुस्तकालय

भाग सनी भाग

t ;rh jxukFku

चित्रांकन

cj[kk ykfg;k

nbt.india

एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ऐशली चूहा बूढ़ा और बीमार हो चला था। एक दिन उसने अपने पोते सनी को बुलाया और उसे पास बिठाकर कहा, “सनी, तुम्हें आज मैं बहुत जरूरी बात बताने वाला हूँ। मैंने तुमसे झूठ कहा था कि इस बिल के अलावा दुनिया में दूसरी कोई जगह नहीं है। दुनिया बहुत बड़ी है। पर मैं डरता था कि बिल से बाहर निकलते ही तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे। मैंने तुमसे यह भी झूठ कहा कि चूहे सिर्फ दौड़ना जानते हैं। सच बात तो यह है सनी कि चूहे पानी में तैर भी सकते हैं। यह सब मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मैं अब ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रहूँगा और मेरे बाद तुम्हें अकेले ही सबका सामना करना होगा।”

इससे पहले कि छोटा सनी कुछ समझ पाता, दादाजी चल बसे।

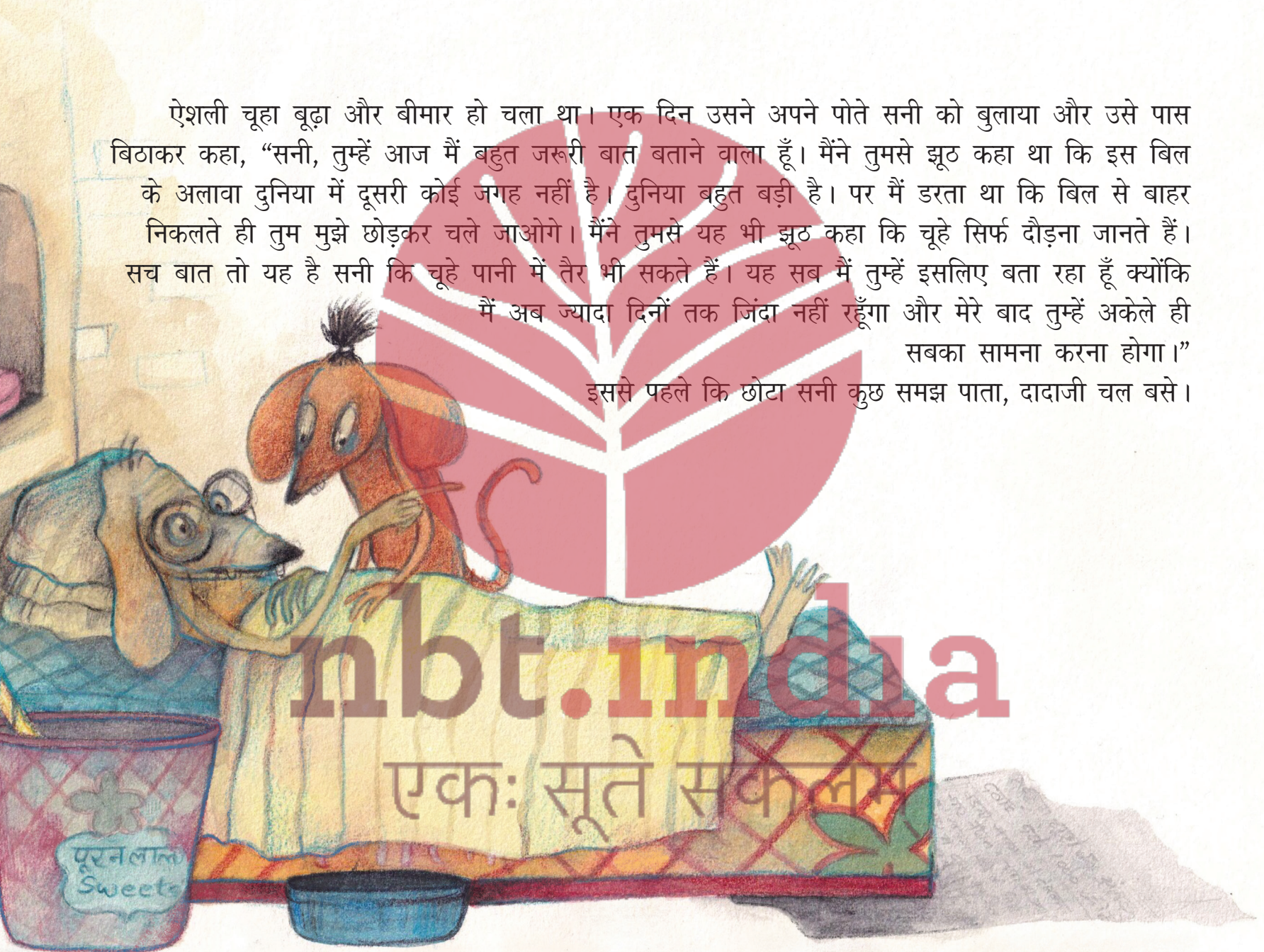

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सनी ने पहले कुछ दिनों तक बिल में जो कुछ था, वही खाकर गुजारा किया। उसके खाने-पीने का इंतजाम दद्दू ही करते थे। जब भी वह बिल से बाहर जाते, दरवाजे पर बड़ी-सी ईंट रख जाते। सनी ने बाहर की दुनिया कभी देखी नहीं थी। बस, दद्दू से सुन रखा था कि बाहर उनके दुश्मन रहते हैं। सबसे बड़ा दुश्मन है बिल्ली।

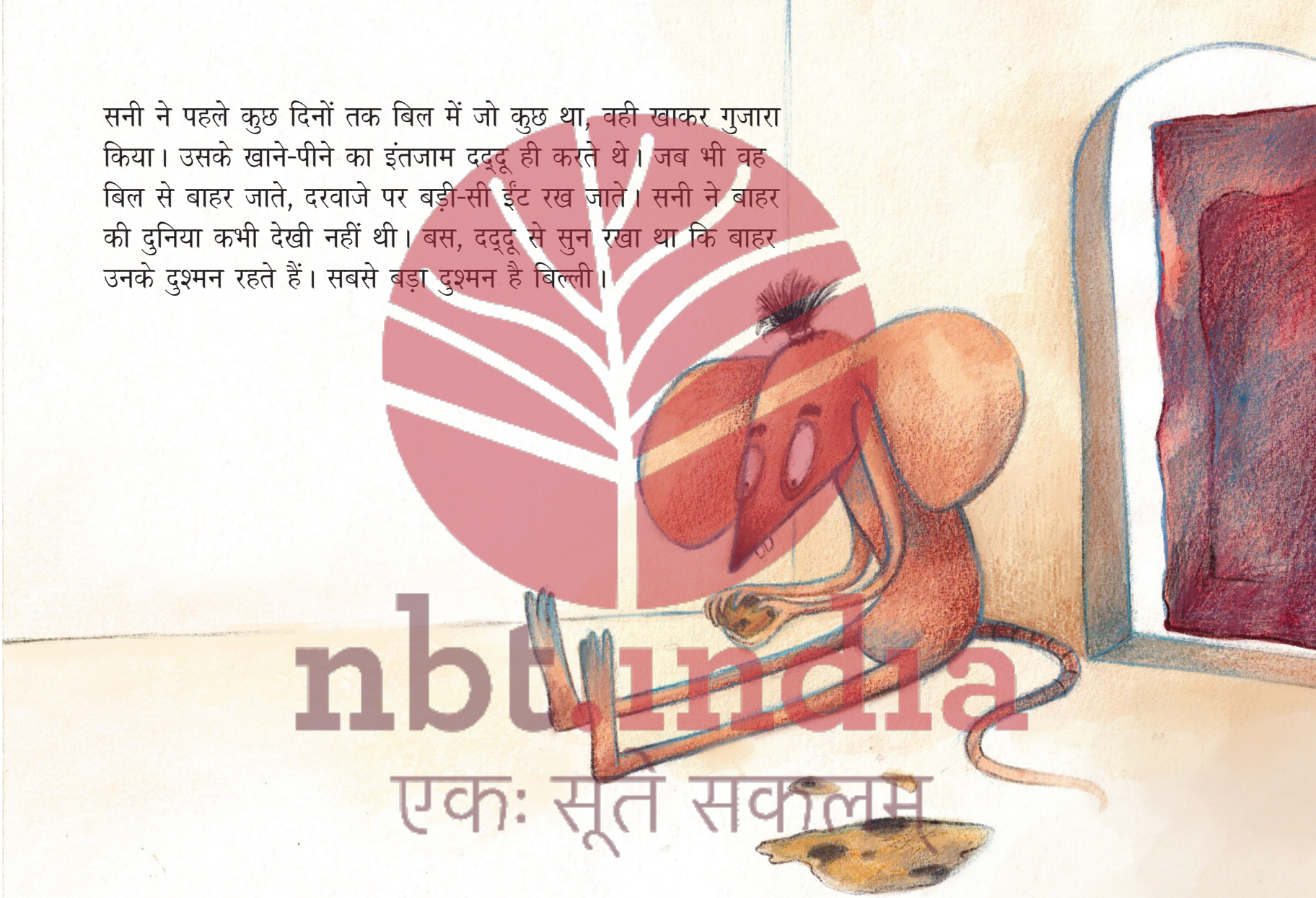

nbtindia
एकः सूते सकलम्

सनी ने आज तक कभी बिल्ली की शक्ल नहीं देखी थी। उसने डरते-डरते
बिल के दरवाजे पर रखी ईंट को हटाया और बाहर निकला।
बाहर की दुनिया कितनी सुंदर थी। कितनी रोशनी थी।
सनी भागने लगा। सामने उसे ढेर सारे लड्डू पड़े नजर आए।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सनी गपागप लड्डू खाने लगा।
इसके बाद उसकी नजर पड़ी, एक थाल में
रखी मठरियों पर।
सनी एक मठरी को कुतरने लगा।
खाते-खाते उसका पेट भर गया, लेकिन
मन नहीं भरा। उसे अब जबरदस्त
नींद आने लगी।

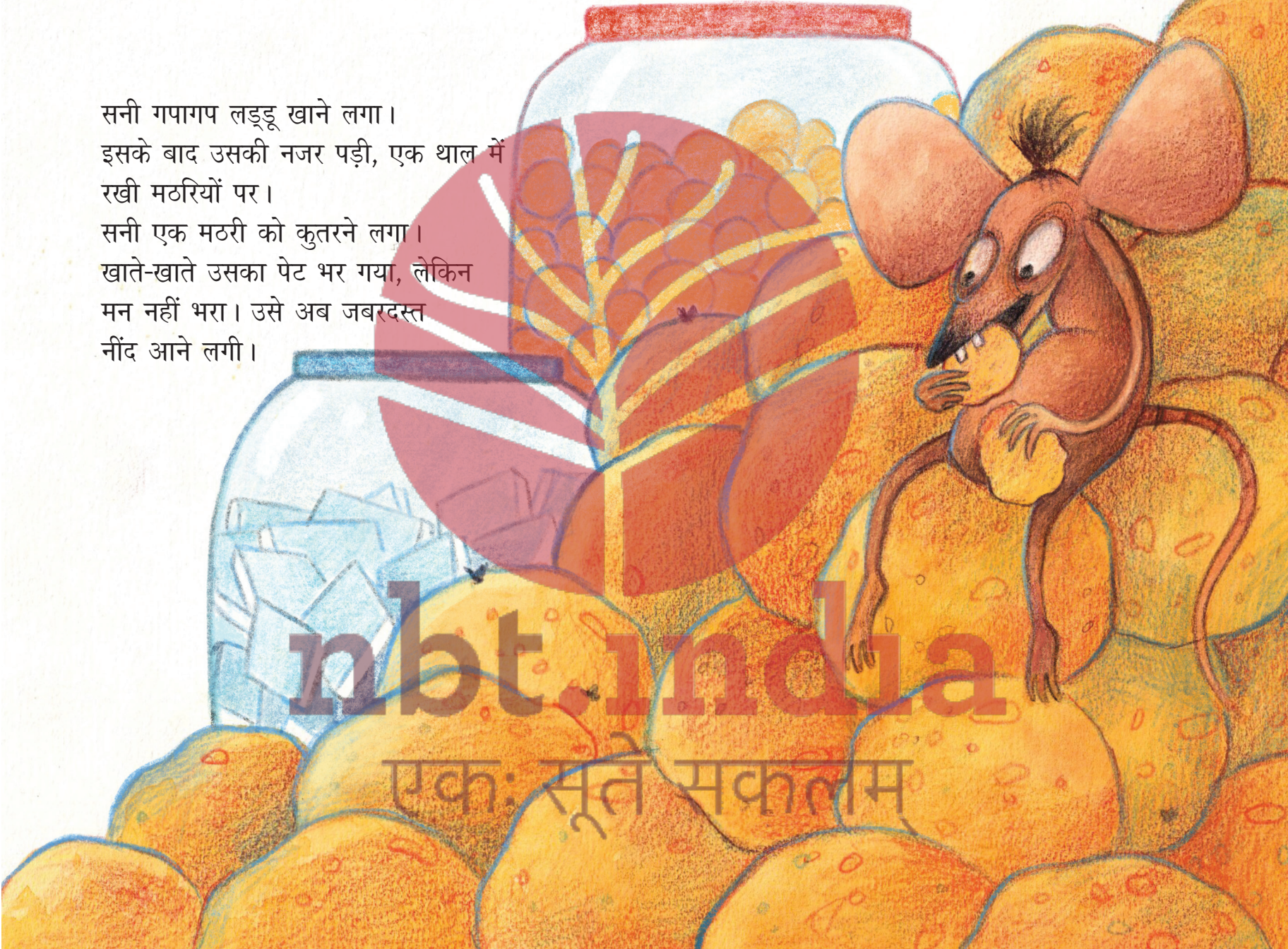

nbt.india
एकः सूते सकलम्

दरअसल वह पूरन हलवाई की दुकान थी। सनी के दद्दू उसके लिए खाना वहीं से लाते थे, लेकिन कम-कम। उन्हें लगता था कि सनी को ज्यादा तला खाने की आदत नहीं पड़नी चाहिए। सनी ने जिंदगी में पहली बार इतना खाना खाया था। उसमें इतनी हिम्मत भी नहीं थी कि बिल में वापस जाकर सो जाए।

उसने अपने आस-पास घूमकर देखा, उसे एक भूरे रंग की रजाई-सी नजर आई। सनी रजाई के पास पहुँच गया।

वह रजाई नहीं थी, सुनहरे-भूरे रंग की सोना बिल्ली थी। वह पूरन हलवाई की पालतू बिल्ली थी। दोपहर को खूब खा-पीकर वह भी सोने की तैयारी कर रही थी। इसलिए सनी को देखकर भी उसके मुँह में पानी नहीं आया।

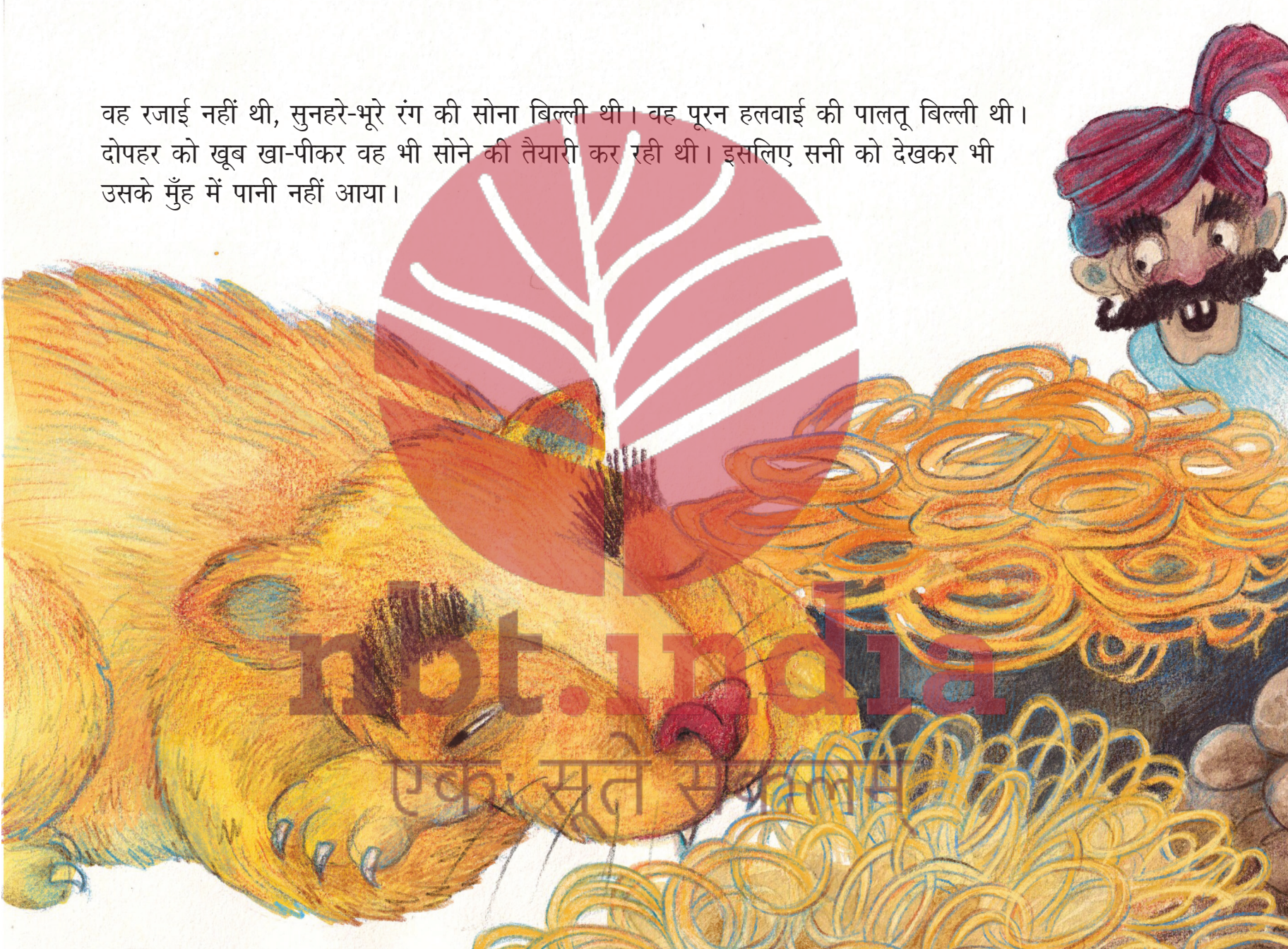

nbt.india

सनी ने रजाई पर सिर रखा, तो सोना थोड़ा-सा हट गई। छुटकू सनी भी सरककर उसके पास आ गया और भोलेपन से बोला, “मुझे ना जम कर निन्नी आ रही है। अगर तुम दुश्मन को आते देखो, तो मुझे जगा देना।”

सोना के कान खड़े हो गए। दुश्मन? कहीं यह छोटा-सा चूहा पड़ोस में रहने वाले बूजो कुत्ते की बात तो नहीं कर रहा? सोना डरती तो बस बूजो से ही थी। उसकी आँखों से नींद गायब हो गई, और सनी मजे से सोने लगा।

nbt.india
एकः सूते सकलम

पूरन हलवाई कड़ाही में समोसे तलने बैठा, तो वह यह देखकर चौंक गया कि सोना बिल्ली की गोदी में सिर रखकर एक चूहा सो रहा है। उसने जोर से आवाज लगाई,

“अर्रर्रर्र हट!”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सनी की आँख खुल गई।
वह चिल्लाने लगा,

“भागो रे, दुश्मन आया।”

जैसे ही वह कूदा,
सोना उछलकर खड़ी हो गई और
उसके पैर से ठोकर लगकर बड़ी वाली
कड़ाही लुढ़कने लगी।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सनी ने लुढ़कती हुई काली कड़ाही को देखकर समझा कि यही बिल्ली है, उसकी दुश्मन।

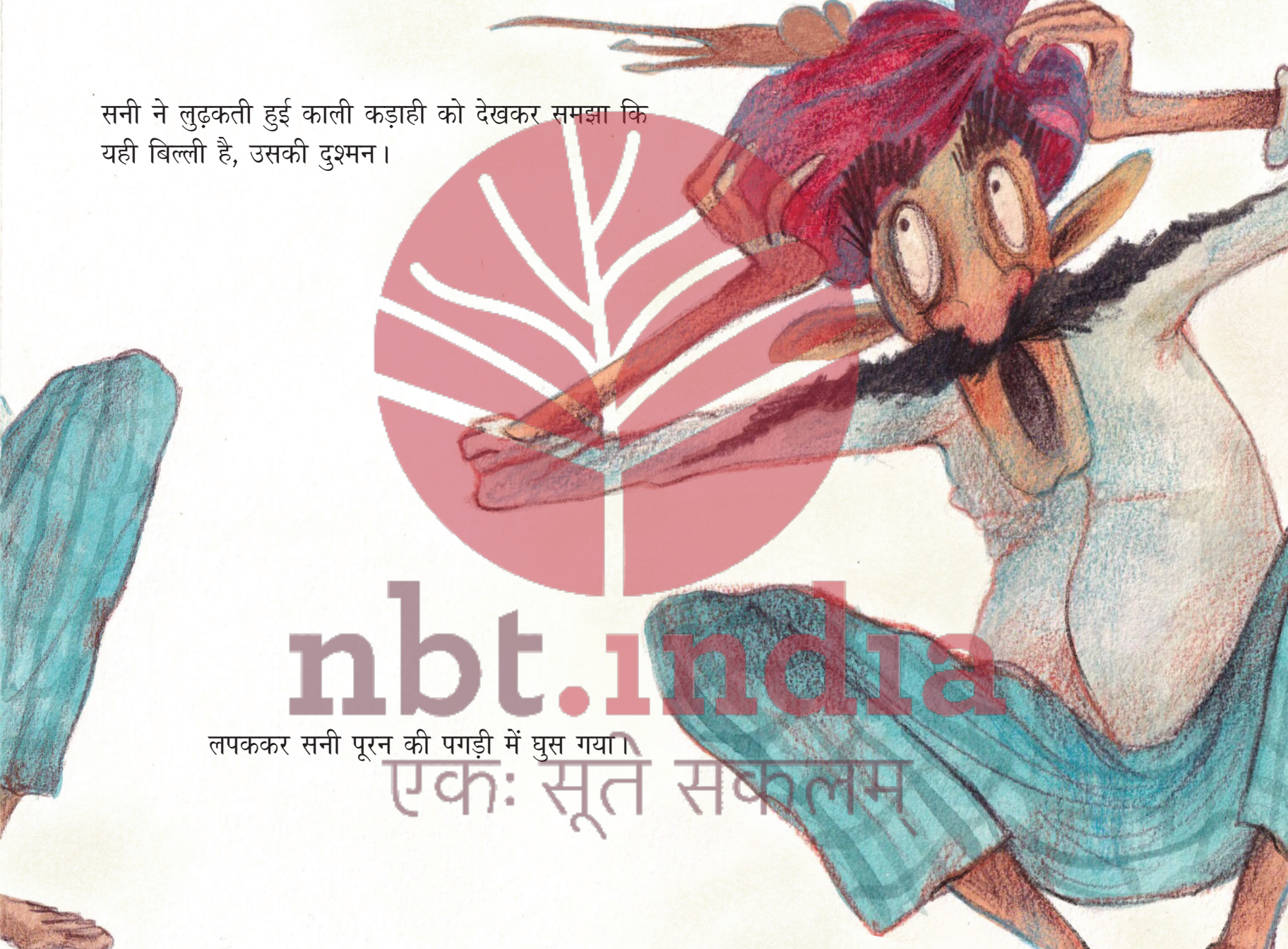

nbt.india

लपककर सनी पूरन की पगड़ी में घुस गया।

एकः सूते सकलम्

पूरन पगड़ी झटकने लगा।

सनी अब उसकी कमीज में घुस गया।
पूरन खड़ा हो गया और जोर-जोर से हिलने लगा।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

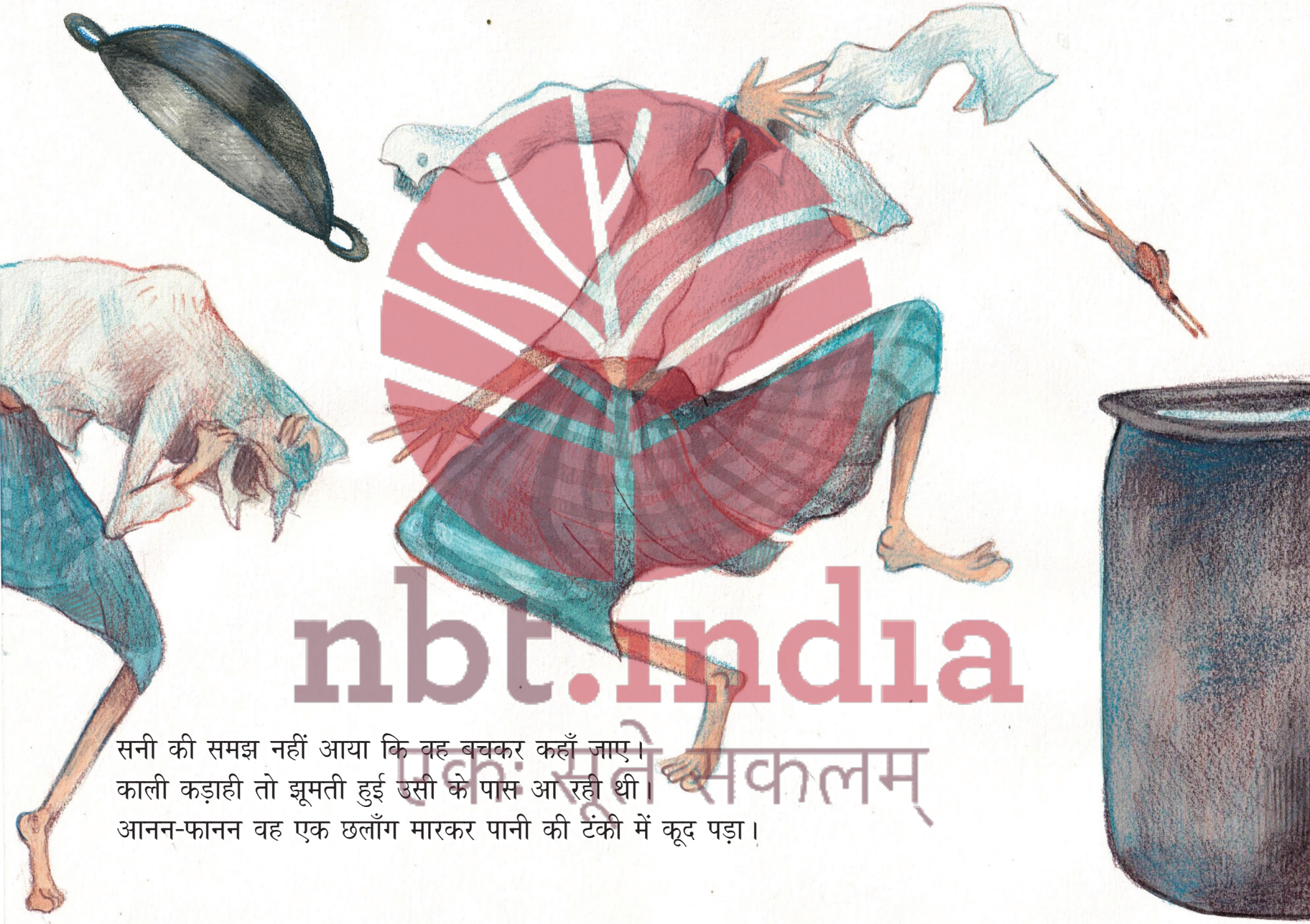

nbt.india

सनी की समझ नहीं आया कि वह बचकर कहाँ जाए।
काली कड़ाही तो झूमती हुई उसी के पास आ रही थी।
आनन-फानन वह एक छलाँग मारकर पानी की टंकी में कूद पड़ा।

एकः सूते सकलम्

उसे लगा कि वह अब डूबा, तब डूबा।
तभी उसे याद आ गया कि दद्दू ने कहा था कि चूहे पानी में तैरना भी जानते हैं।
उसने फौरन हाथ-पैर मारने शुरू किए।
जैसे ही वह टंकी की दूसरी तरफ पहुँचा, कूदकर बाहर निकला।

तब तक पूरन कड़ाही को काबू में कर चुका था और अब सोना को डाँट रहा था
कि उसके रहते चूहा अंदर कैसे आ गया? सोना कुछ-कुछ शर्मिंदगी से बैठी रही।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

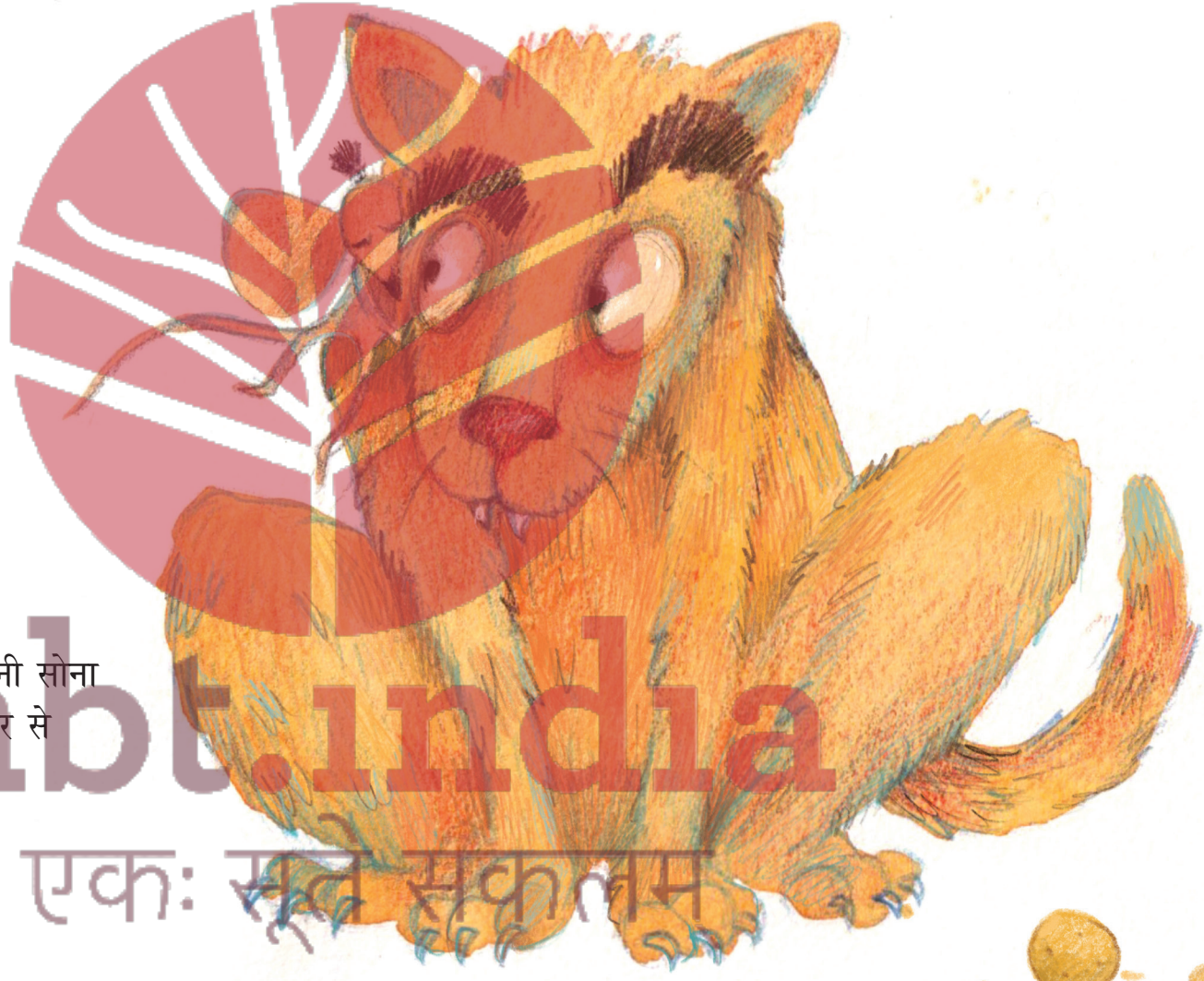

पूरन के वहाँ से जाते ही सनी सोना
के पास आया और बड़े प्यार से
उसके कंधे पर चढ़ गया,

nbt.india
एकः सूते सकलम्

“हमारी दुश्मन बिल्ली चली गई ना? तुम बहुत अच्छी हो, तुमने मुझे बचा लिया।”

सोना के गाल पर पुच्ची देकर सनी ने एक बर्फी का टुकड़ा उठाया और बिल की तरफ चल पड़ा।

उसके जाने के बाद बड़ी देर तक सोना सोचती रही
कि यह नटखट चूहा किसे दुश्मन कह रहा था?

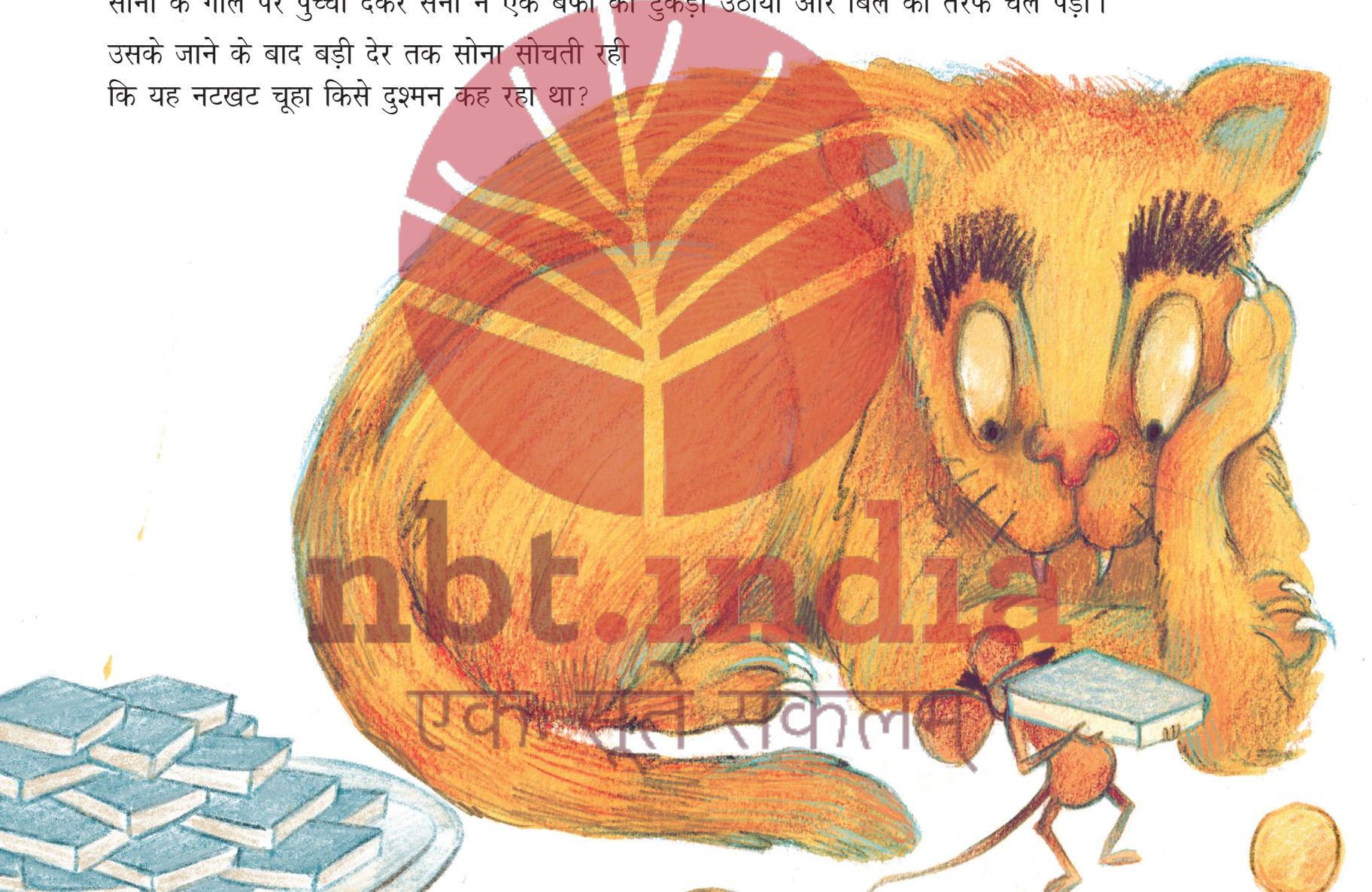

nbt.india
एक: सूत्रे सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

नूतन ग्राफिक्स, साहिबाबाद द्वारा शब्द संयोजन तथा इंडिया ऑफसेट प्रैस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

जयंती रंगनाथन की परवरिश लौह शहर भिलाई में हुई। मुंबई से एम.कॉम. किया और वहीं हिंदी पत्रिका धर्मयुग में काम करना शुरू किया। उसके बाद सोनी एंटरटैनमेंट चैनल, मलयाला मनोरमा समूह, अमर उजाला आदि के लिए काम करती रहीं। लगभग तीन दशकों से मीडिया में सक्रिय जयंती रंगनाथन के पाँच उपन्यास, चार कहानी संग्रह और तीन बच्चों के उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। प्रिंट के अलावा, टीवी, फिल्म, वेब और ऑडियो माध्यम के लिए रचनात्मक लेखन। संप्रति हिंदुस्तान अखबार में एक्जीक्यूटिव एडिटर और बच्चों की पत्रिका नंदन की संपादक।

बरखा लोहिया ने दिल्ली के कॉलेज ऑफ आर्ट से शिक्षा ग्रहण की और 'रियाज अकादमी, भोपाल' से ब्बचों की पुस्तकों के चित्रण का प्रशिक्षण लेने के बाद साईकिल, प्लूटो जैसी बाल पत्रिकाओं के लिए चित्रांकन किया। उनके द्वारा चित्रित एक पुस्तक प्रथम बुक्स से भी आई है।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 35.00
ISBN 8123790147
9 788123 790145
19201691

nbt.india
एक: सूते सकलम्

भाग सनी भाग

t ;rh jxukFku ■ चित्रांकन : cj[kk ykfg;k